रात्रि क्लास 28/11/68 ओम शान्ति शिवबाबा याद है? वर्सा याद है? ल॰ना॰ के चित्र को देख खुशी होती है? बच्चे जानते हैं हम यह बनने लिए ही पढ़ते हैं। समझा भी सकते हैं, इन्होंने कैसे राज्य पाया। सूर्यवंशी-चंद्रवंशी राजधानी कैसे स्थापन हुई, कब हुई, जान न सके। तो यह है एम-ऑबजेक्ट। इनको देख खुशी ज़रूर होनी चाहिए। यह है हमारा एम-ऑबजेक्ट। सिवाय बेहद के बाप के और कोई राजयोग सिखा न सके। मेहनत है। काम महाशत्रु है, इनको जीतने से जगतजीत बनेंगे। यह जगतजीत है ना। दोनों को पवित्र गाया जाता है। वह दो कला कम हो जाता; क्योंकि दुनिया पुरानी हो जाती है। हम स्टूडेंट्स को यह बनने का है तो खुशी होगी ना। घड़ी-2 देखना चाहिए। वण्डर खाना चाहिए। हम इस डिनायस्टी के थे। फिर पुनर्जन्म लिया। हिस्ट्री रिपीट कैसे होती है, वह भी समझ कर खुशी होनी चाहिए; परन्तु माया वह खुशी आने नहीं देती है। खुशी रहे तो बाकी क्या चाहिए। यहाँ तुम बच्चे स्वतंत्र हो। तुमको कोई चिंता करने की कोई दरकार नहीं। जो बन्धन में होते हैं उनको इतनी खुशी नहीं होती। तुम बच्चों को तो कोई बन्धन नहीं है। यह तो (बैज) पॉकेट में पड़ा रहे देखने लिए। भक्ति-मार्ग में बाबा पॉकेट में रखते थे; परन्तु यह पता थोड़े ही था, हम बनेंगे। अभी बच्चे समझते हैं आधा कल्प हम फ़िक्र से फ़ारिग हो जावेंगे। इस समय कोई न कोई चिंता रहती है। तुमको तो चिंता से मुक्त कर देते हैं, तो अथाह खुशी होनी चाहिए ना। बाबा को तो बहुत ख्यालात चलानी पड़ती है। कई सेन्टर्स पर खिट-पिट रहती है तो ख्याल चलता है। फिर कहा जाता है ड्रामा। थोड़ा हिचकना होता है फिर ड्रामा पर आ जाते। ज़रा भी मूँझ न हो, फिर तो कर्मातीत अवस्था हो जाये। कुछ कहा, कुछ सुना, दुख ज़रूर होता है। भल पदमपति हो, कोई भी हो, दुख ज़रूर देखना पड़ता है। घड़ी-2 बाप याद दिलाते हैं बच्चे, अभी तुम सभी दुःखों से उस पार जाते हो। यह भी अभी तुम संगम पर ही सुनते हो। हम छी-छी दुनिया से नई दुनिया में जाते हैं; परन्तु माया रावण यह भी नहीं सहन कर सकती, तो विघ्न डालती है। बच्चों को अन्दर में आना चाहिए अभी हम अमरपुरी में जाते हैं। हाँ, जितना सर्विस करेंगे उतना ही ऊँच पद पावेंगे। बच्चे भी कोशिश करते हैं ऊँच पद पाने की। कोशिश कर जितना हो सके ऊँच पद पाने की रेस करनी है। समझेंगे कल्प-कल्पांतर हमारा ऊँच पद रहेगा। तुमको पिछाड़ी में बहुत सा॰ होंगे। यह भी बाबा ने कह दिया है। फिर पछताने से कुछ कर न सकेंगे। ऐसे मत समझो टाइम पड़ा है। अचानक मौत कैसे आ जाता है। एक के बीमार होने से कितने को दुख होता है। यह है ही दुखधाम। स्टूडेंट लाइफ में जबकि एम-ऑबजेक्ट सामने हैं, शिवबाबा पढ़ा रहे हैं, बड़ी खुशी रहनी चाहिए। बाप खुद कहते हैं मुझे याद करो। काम जीत जगतजीत बनो। (f)फिर यह जगतजीत होगा ही नहीं। बाप आते ही ऐसे समय हैं जबकि पावन दुनिया स्थापन हो पतित दुनिया का विनाश होता है। कोई भी नहीं जानते, यह ऐसा राजयोग सीख रहे हैं। तुम गुप्त हो। यही एक/दो .... स्मृति दिलानी है। बाप को याद करना है। एक ही सद्गुरु द्वारा जीवनमुक्ति मिल जाती है। किसको थोड़ा भी यही समझाना है, बाप पतित-पावन है, उनको याद करने से तुम सतोप्रधान बन जावेंगे। स्वर्ग में चले जावेंगे। बहुत सहज है मीठी-2 बातें। अच्छा, बच्चों को गुडनाइट और नमस्ते।

बाप समझाते हैं माला का नम्बरवन दाना बनना है। तो जब ऐसे दैवी गुणवान बनेंगे तब (स्)कॉलरशिप पा सकेंगे। कम स्कॉलरशिप नहीं है। विश्व का मालिक बनना होता है। बेहद का बाप आकर पढ़ाते हैं, बाकी और क्या चाहिए। रावण भी कम नहीं है। एकदम पट गिराये देती है। अच्छे-अच्छे बच्चों को भी माया बड़ी तंग करती है। ड्रामा अनुसार ऐसा होता है। बच्चे सुधरते ही जावेंगे नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार। इसलिए बाबा यादप्यार भी नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार ही देते हैं। बाप की बुद्धि तो सर्विसएबुल बच्चों तरफ ही चली जाती है। जो आज्ञाकारी बच्चे ही नहीं उनको क्या प्यार करेंगे। बाप तो जानते हैं ना कौन-कौन अच्छे सर्विसएबुल बच्चे हैं। अच्छे सर्विस करने वाले हैं। विश्व की बादशाही का श्रृंगार याद है?